RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper

सामाजिक सरोकार का अग्रदूत था 'नवज्योति' : आजादी के मिशन के साथ साहित्यिक पत्रकारिता से कुप्रथाओं– समस्याओं पर जन–चेतना जगाई

रोहित कुमार सोनी

स्वतंत्रता आंदोलन के वक्त पत्रकारिता की अहम भूमिका को कोई नकार नहीं सकता। पत्रकारिता आजादी का मिशन थी। क्रांति की चिनगारियों की शोलों में बदलने वाली थीं। ब्रिटिश सरकार आंदोलनों से ज्यादा अखबारों के प्रकाश से डरा करती थीं। इसलिए कई प्रतिबंध–पाबंदियां, समाचार पत्रों के संपादकों को जेल की सलाखों के पीछ ड़ाला गया। अखबार स्वतंत्रता क्रांति की जन–ऊर्जा माने जाते थे। लेकिन अखबारों ने तब से ही सामाजिक सरोकारों, आदर्श समाज के निर्माण, व्याप्त खामियों को सुधारने, जन समस्याओं ं को मुखरता से उठाने के लिए इतना कुछ प्रकाशित किया, जिससे उनकी अहमियत समाज–सुधार में तब से ही कतई कमत्तर नहीं आंकी नहीं जा सकती हैं। अखबारों ने तब जनता को सामाजिक कुरूतियों–कुप्रथाओं और समस्याओं के प्रति भी पूरजोर जन–जागरण का काम किया।

तब अखबारों के प्रकाशन की इसी अहमियत और ताकत को अकबर इलाहाबादी ने शब्दो में पिरोकर लिखा था– **'खींचों ना कमान को, न तलवार निकालो, जब तोंप मुकाबिल हो तो अखबार निकलो'।** साफ था कि जनता के दिलों–दिमाग में अगर आजादी के साथ सामाजिक कुरूतियां–समस्याओं के प्रति जनचेतना समाचार पत्रों में लेख–आलेखों– कविताओं– साहित्य और समाचारों के जरिये जगाई गई तो ब्रिटिश तोपें इनके आगे नकारा तो होंगी हीं, सामाजिक सरोकारों के प्रति जागरण और इनके जडमूल से उन्नमुलन भी आसान होगा।

आजादी से पूर्व समाचार पत्रों में सामाजिक बुराईयों–समस्याओं पर ध्यान खींचने और इनके के खिलाफ लोगों को प्रेरित कर आगे बढने की अलख जगाने के लिए तब राजस्थान के अजमेर जिले से **अक्टूबर 1936** से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र **नवज्योति** के तत्कालीन प्रकाशित अंको 1936 से 1950 तक (वर्तमान में भी दैनिक समाचार पत्र के रूप में प्रकाश जारी) का अध्ययन किया गया, जो नवज्योति की आजादी को अलख जगाने के साथ ही साहित्यिक पत्रकारिता से सामाजिक सरोकारों से अग्रदूत की भूमि नजर आई।

नवज्योति ने आजादी पूर्व राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, देश के पहले पीएम रहे स्वर्गीय पंडित जवाहर लाल नेहरू, माणिक्यलाल वर्मा, विद्यावती गुप्त, महादेवी वर्मा, रवीन्द्रनाथ ठाकुर सरीखे दर्जनों ऐसे साहित्यकारों और पत्रकारों की कलम की सामाजिक सरोकार के लिए आवाज बनाया। सामाजिक कुरूतियों–आडम्बरों, अंधविश्वासों, देश के आर्थिक हालातों, ब्रिटिश हुकूमत में व्याप्त जन सुविधाओं की खामियों, महिला सशक्तिकरण, महिलाओं की दशा सहित हर विषय पर चेतना जागरण को साहित्यिक पत्रकारिता का सहारा लिया।

तब महात्मा गांधी और पंडित जवाहरलाल नेहरू ने नवज्योति में शराबबंदी की पूरजोर पैरवी की थी। पंडित नेहरू ने नवज्योति के **27 अगस्त 1938** में अपना '**चीन से लौटकर**' शीर्षक से संस्मरण लिखा, जिसमें उन्होने भारत में शराबबंदी का समर्थन किया। शराब का विष समान बताते हुए समाज के लिए अभिशाप करार दिया। उनके संस्मरण के प्रमुख अंश में लिखा किः–

'यदि पूछना हैं कि यह विष कैसा होता है तो नशेबाजों की भूख प्यास से तड़पती अर्धांगिनियों से पूछो। इसके गुणों का पता लगाना है तो नशेबाजों के रोते कलपतें लालों से पूछो। पूछों अकिंचन झोपड़ियों से। पूछो मिी के बचे–बचाएं बर्तनों से, पूछो उदासीन उजड़े परिवारों से, पूछो नशेबाजों के खोये हुए दिनों से, सबसे एक ही जवाब मिलेगा, विष ने उसके दिनों को और फिरा कर रख दिया है।'

राष्ट्रपति महात्मा गांधी ने भी **3 सितम्बर 1937 के नवज्योति के अंक** में 'सबसे बड़ा काम शराबंदी' शीर्षक से लेख लिखा। इसमें बताया कि किस तरह से शराब ने समाज को अंधेरे की ओर धकेल दिया है। कैसे निचले तबके को शराब से बचाने का प्रयास हो। शिक्षा के माध्यम से इसके खिलाफ मुहिम छेड़ी जाए। शराबबंदी के कई उपाय उन्होंने इस लेख में लिखे, जिसमें प्रमुख अंश इस प्रकार है –

सत्यनारायण सराफ ने **7 अक्टूबर 1936** के अंक में **'नितांत निकम्मी है'** लेख में जागीरदारी प्रथा पर प्रहार किया। उन्होंने किसी अखबार में जागीरदारी प्रथा का समर्थन करने वाला कोई लेख पढ़ा और उसका हवाला दिए बगैर विरोधस्वरूप लेख लिखा। उस लेखक को आड़ें हाथों लिया ही, साथ ही जागीरदारी प्रथा को देश की आजादी, समाज के विकास के लिए घातक करार दिया।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

महिला सशक्तिकरण की चिंगारियां भी तब नवज्योति के माध्यम से साहित्यकार महादेवी वर्मा, विद्यावती गुप्त, माणिक्यलाल वर्मा सहित अनकों साहित्यकारो ने अपनी बात विभिन्न साहित्य विधाओं से रखी। महिलाओं के शोषण, सती प्रथा, विधवा की नारकीय जिदंगी, हिन्दू समाज में महिलाओं को लेकर व्याप्त अंधविश्वासों, महिलाओं के घर–परिवार में दयनीय स्थिति को सुधारने की लौ जलाई।

महादेवी वर्मा ने **नवज्योति के 23 अक्टूबर 1945** के अंक में समाज में घृणित और वासना की दृष्टि से देखी जाने वाली पतित महिलाओं के हालातों, मजबूरियों और स्त्रीत्व के पुरूष प्रधान समाज में उड़तें मखौल पर आक्रामक लेख '**स्त्रीत्व का व्यवसाय**' शीर्षक से लेख में लिखा। उनके प्रति करूणा, दया, भावना जागृत करने का प्रयास किया ताकि उन्हें सामाजिक प्रताड़ना से बचाया जा सके। नवज्योति से तब के प्रबल पुरूष प्रधान समाज के विरोध को दरकिनार कर इसे इसे प्रकाशित भी किया। जबकि तब अधिकांशतः महिलाएं अशिक्षित ही हुआ करती थीं, पाठक केवल पुरूष होते थे। लेकिन नवज्योति ने अपनी सामाजिक सरोकार की जिम्मेदारी को सर्वोपरि रखकर इस तरह के लेख प्रकाशित करता रहा।

महिलाओं को लेकर **दिसम्बर 1937** के अंक में **'स्त्री और पुरूष'** शीर्षक से लेख लिखा। विद्यावती गुप्त ने कहानी के माध्यम से विधवाओं के नारकीय जीवन और उनके मौलिक अधिकारों के लिए दिलों–दिमाग को अंदर तक झकझोर देने वाली कहानी '**विधवा की अंतर्व्यथा**' लिखी। गुप्त ने ही 21 मार्च 1937 के अंक में **'हिन्दू समाज और तलाक'** प्रथा पर अपनी बात बेबाकी से रखी।

28 अक्टूबर 1937 के अंक में रमेश चन्द्र ओझा ने 'विधवा की अर्न्तज्वाला' कविता विधवा महिला की पीड़ा, एकाकी और कांटो भरा जीवन, सामाजिक तिरस्कार को लेकर प्रकाशित हुई–

अंतर–व्यथा में आज,
मम नयन से जलधार छूटें।
हृदय है सुख–शून्य मेरा, वेदना मंदिर बना रे,
विघना हुए हो वाम तुम, आज दे क्यों यातना रे,
विरह की यह वेदना मम उर पटल के मध्य बोले,
हूं निशि दिन तड़पती, हाय स्मरण कर सुख कल्पना रे,
कहां से धरूं अब धीर,
उर वाद्य के तब तार टूटे,
स्मरण कर उस मधु मिलन को, फट रही है आज छाती,
कौन होगा अब सहायक,
काल ने सब सुख–सार छूटे,
अंतर–व्यथा में आज,
मम नयन से जल–धार छूटे।

किसानों की दयनीय– संघर्षशील जीवन पर **30 जनवरी, 1939** के अंक में दीनदयाल दिनेश की '**दलित किसान**' नाम से गीत प्रकाशित कर उनकी संघर्ष की व्यथा को जन–जन तक पहुंचाया गया। जिसमें शुरूआती अंश इस प्रकार है :–

धरा के मुकुलित प्राणी,
भूला कर निज प्राणों का मोह,
चढ़ाते जय को अतुलित भेंट,
दुखों को लेकर क्यों तुम टोंह।
अभावों का संचय कर कोष,
लुटाते क्यो अपन अरमा,
भूख को खाकर भूखे वीर,
धुलाते क्यों तम अपने प्राण।
खिला है जग का यह उद्यान,
पा तुम्हारों प्राणों का खाद,
हंसा है जग का निर्मम मान।
पचा तब कुटिया का अवसाद,
तुम्हारे तन पर खेल नित्य,
व्यर्थ ओले, अकाल का राग,
दिखाया बिजली ने भी प्यार।
नियमित न द अपना दुख कोष,

पिया तुमने विष का कटु घूंट,
सुधा का देकर निर्मल श्रोत।
बने तुम नीमकमल से सौम्य,
करूणा–करण से है ओतप्रोत।
स्वंय मिटते जिसकी ले चाह,
बचा देने को अब क्या शेष।
लुटाया तुमने सब कुछ वीर,
बा है बंजर अब तो शेष।

नवज्योति के संस्थापक रहे स्वतंत्रता सेनानी रामनारायण चौधारी, दुर्गा प्रसाद चौधरी ने अपने हितों को भी सामाजिक प्रतिबद्वता के लिए दांव पर लगाया था। कई साल जेलों में काटे। लेकिन समाज के प्रति अपने धर्म को नहीं भूलें।

28 वें ही अंक में **महेश चन्द्र ओझा** ने अहिंसा, छल–कपट, झूंठ की समाज की बढ़ती प्रवृति पर चिंता जताते हुए कविता लिखी –

होता था हें राजन तुम से,
सत्य, अहिंसा का उपचार।
आज सत्य को घ्यात होती,
और खुला है हिंसा का द्वार।
प्राणों को भी भेंट चढ़ाकर,
सदा पूर्ण की अपनी बात।
अब वचनों में बंधकर भी तुम,
उन्हें तोड़ते हो दिन रात,
चुगल खोर गुंडे तब डर से,
फटक नहीं सकते थे पास
आज उन्हीं की आन बनी हैं,
सच का करते है उपहास।

31 जनवरी 1937 के अंक में **राम हिन्दूस्तानी ने 'महागान'** के शीर्षक से देश में व्याप्त गरीबी–भूखमरी की ओर आमजन का ध्यान खींचने के लिए कविता लिखी :–

करती कंगाली यहां नृत्य, भूखों के उड़ते यहां प्राण
थर–थर कंपित है यहां गान, चिथड़ा न, शील से मिले प्राण।
छाया पेड़ों की सघन नहीं, फिर भी उसे नीचे सोते अनेंक,
वर्षा, तप और हिम से बचाव करने की है कुटिया न एक।
रोता बसंत करके विलाप, दुखितों का ऐसा करूण हाल,
दुखितों के छूटे दुख महान,
गा दे कोई वह महागान।

व्यंग्य कॉलम भी साहित्यिक पत्रकारिता की एक विधा है। नवज्योति ने **जनवरी 1939** से निरंतर डेढ़ दशक तक **'चक्कर की चटनी'** नाम से साहित्यकार, कवि और पत्रकार सामाजिक परिदृश्य की वेदना को अपनी भावनाओं, संवेदनाओं में बांधकर परोसते थे, समाज की पीड़ाओं, विडम्बनाओं को जनता के समक्ष रखते थे।

दिसम्बर 1937 के अंक में लेखक **अनिकेत** ने **'झंडे का सवाल'** शीर्षक से साम्प्रदायिक वैमनस्यता के फैले जहर के घातक होते प्रभावों से भारत की एकजुटता, अखंड़ता पर खड़े होते संकट को दर्शाया।

28 नवम्बर, 1937 के अक में **दीनदयाल दिनेश** ने **'तू और मैं'** कविता के माध्यम से अमीर–गरीब के बीच की खाई और समानता का अधिकार होने की पैरवी के विचार को जागृत्त करने की कोशिश की, कविता इस प्रकार थी :–

मेरे घर में दुख गरजता, तेरे घर में सुख–बरसात,
मेरे घर में रात अंधेरी, तेरे घर है दिन–रात।
निम्य विलसता तू मुहरों को, मम दानों पर आज मुहर,
तेरे मचता रंग बंसती, पतझड़ बसती आज इधर।
तेरे मन में चाह नवेली, तृप्ति नहीं जिसने देखी,
तेरे सुख में सुलग रही है, मेरे हित की शीतल आग।
तू–तू हैं, मैं मैं हूं, सच है एक हमारा फिर भी अंत,

फिर क्यों चलते लें दुविधा, तुम नहीं जो कभी अनंत।
तोड़–फोड़ कर महल–कुटी को आज बसायें एक सराय,
हम सब भाई–भाई हों फिर, रहे न कोई सेवकराय।
एक अकेली मानवता हो, सुखद सुरीला उसका राग,
आत्मदान का भान जगे फिर, विस्मृत होवे राग–विराग।

'मृत्यु मोह' शीर्षक से **यशवंत सिंह नाहर ने 31 जनवरी 1940** के अंक में आदर्श समाज के निर्माण के लिए पाठकों को अंतः मन को झकझोरने को शानदार शब्द गढ़े। आचार–विचार रहित, आदर्श सोच के परे, चापलूस–चाटूकार, लोभी, बेईमानी और कपटियों को सम्मान देने वाले, अपना स्वाभिमान और आत्म सम्मान गिरवी रखने वाले झूठ के अनुयायियों को उन्होंने मृत प्रायः बताया। उन्होने जिदंगी उसे ही माना जो विचारो, आदर्श, आत्म सम्मान, स्वाभिमान, ईमानदारी, सत्य–निष्ठा और समाज के लिए जीते हैं। उनकी यह रचना यहां बताना जरूरी है, क्योंकि ये वर्तमान परिदृश्य में भी प्रासंगिक नजर आती है। उनके लेख के कुछ अंश यूं हैः–

'हमें जीना नहीं क्योंकि मृत्यु ने हमें मोह लिया है। जीवन की कीमत, चांदी के टुकड़ों से आंकी जाती है। जीवन का आधार हमने वैभव में पाया हैं। जीवन की गहराई हमने संपदा में देखी है। हमारा आत्म सम्मान मुर्झा रहा है। हमारा संसार उजड़ा है और हमारें देवता हमसे रूष्ठ है। हमने अंधकार में चकते धुंए को अपना प्रकाश माना हैं। ..... आगे लिखते है कि हम डाकू को पूजते है और तपस्वी को धकेल कर निकाल देते है। हमारा आतिथ्य चोरों को स्थान दे रहा है। हमारा मनोबल लूटेरों को निमंत्रण दे रहा है। हम सम्मान खोकर अपनी पगड़ी की रखा करते है और मन को मारकर शरीर को बचाते हैं। सत्य को खो दिया है, अपना बल, संबल के चरणों में चढ़ा दिया है। ..... जीवन के नाम पर मृत्यु की उपासना करते हैं। हमारी नीति अनीति है। हमारा प्रकाश अंधकार का प्रसार हैं। हमारा बल हमारी पराजय बना हैं।'

उक्त लेख, कहानियां, व्यंग्य और कविताएं बानगी भर है। पुराने अंको को देखेंगे तो ऐसे ढ़ेरों साहित्यिक पत्रकारिता के प्रकाशन समाचार पत्र में मिलेंगे। नवज्योति की तत्कालीन पत्रकारिता में तब साहित्य का समावेश उसे साहित्यिक पत्रिकाओं मे भी शुमार करता है।

नवज्योति की साहित्यिक रूप में सामाजिक सरोकार की यात्रा पाक्षिक, मासिक के बाद आज दैनिक राज्यस्तरीय समाचार पत्र के रूप में 85 साल बाद भी नियमित जारी है। भारत के सबसे पुराने समाचार पत्रों मे इसकी गिनती होती है। आजादी के पूर्व 1936 से ही नवज्योति ने साहित्यिक पत्राकारिता के माध्यम से समाज की कोढ़ रूपी कुरूतियों, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं, महिला सशक्तिकरण, किसानों की पीड़ा, दलितों की प्रति क्षीण सोच सहित अन्य मुद्दों को उठाने का सशक्त माध्यम बनाया। कवितांऐं, लेख–आलेख, व्यंग्य, कहानियां, संपादकीय लेख, त्वरित टिप्पणियां इत्यादि को भरपूर स्थान दिया। हालांकि यह चिंतनीय है कि अब पत्रकारिता में साहित्यिक सोच को उतना स्थान नहीं मिल रहा है, जितना तब के नवज्योति समाचार पत्र में देखने को मिला। लगातार इसकी कमी खलती है। विचारणीय हैं कि एक वक्त जहां साहित्य को पत्रकारिता की आत्मा कहा जाता था, उसका अब ह्रास हो रहा हैं।

संदर्भः

1. **नवज्योति समाचार पत्र के वर्ष 1936 से 1950 के प्रकाशित अंक।**